कुरीतियां सामाजिक विकास में बाधक

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

यह विषय सामाजिक चेतना से जुड़ा विषय है। हर समाज में अच्छाई और बुराई दिखाई देती है। समय के साथ साथ समाज की सोच में भी परिवर्तन आना चाहिए। परम्पराएं और रीति–रिवाज समय के अनुसार बदलते रहते हैं। कुरीति का अर्थ है– ऐसी परम्परा जिसे समाज में मान्यता न मिले कुछ ऐसे नियम, कुछ ऐसे कार्य जिसे समाज स्वीकार नहीं करता कुरीति कहलता है। कुरीतियां निंदनीय होती हैं। भारत में प्राचीनकाल में सतीप्रथा, विधवाप्रभा और बाल विवाह जैसी कुरीतियां व्याप्त थी। इन कुरीतियों को दूर करने के लिए भारत के समाज सुधारकों ने बहुत प्रयास किया। राजा राम मोहनराय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, केशवचन्द सेन और ऐसे ही अनेक महानुभावों ने समाज सुधार का वीणा उठाया और धीरे–धीरे समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर किया। समजा में प्रचलित धारणाओं को बदलना बहुत कठिन होता है। किन्तु यदि प्रयास सकारात्मक रहे तो कोई भी कार्य कठिन नहीं है। धीरे–धीरे शिक्षा के द्वारा सामाजिक चेतना जागृत हुई और समाज के लोगों ने स्वयं महसूस किया कि ये परम्पराएं गलत हैं। अतः समाज में इन्हें स्थान नहीं देना चाहिए। धीरे–धीरे ये कुरीतियां दूर हो गई। भारतीय समाज में एक पत्नी प्रथा को मान्यता मिली हुई है। यदि कोई इस परम्परा को तोड़कर एक से अधिक शादी करता है तो यह भी कानूनन अपराध है और कुरीति की श्रेणी में आता है। मुसलमानों में भी तलाक की प्रथा है। यह एक प्रकार से सामाजिक बुराई है। तीन बार तलाक–तलाक–तलाक कह देने पर किसी स्त्री का जीवन बर्बाद कर देना कहां का न्याय है। सरकार इसके लिए भी कानून बनाने का प्रयास कर रही है। कुरीतियों से समाज पतन की और जाता है। दहेज प्रथा भी एक प्रकार की कुरीति हे। प्राचीनकाल में इस प्रथा का स्वरूप कुछ दूसरा था। कन्या जब विवाहित होकर अपने पति के घर जाती थी तो कन्या पक्ष के लोग खुशी–खुशी कन्या को दहेज के रूप में कुछ न कुछ अवश्य देते थे। किन्तु आजकल वर पक्ष की तरफ से इस प्रथा को कूननी अधिकार मान लिया गया है। जिसके पास धन सम्पत्ति

रहती है उसे दहेज देने में कोई परेशानी नहीं होती। किन्तु जिसके पास धन नहीं होता उसके लिए कन्या का विवाह करना बहुत कठिन हो जाता है। सामाजिक नियमों का पालन करते हुए कन्या पक्ष के लोग कभी–कभी अपनी सम्पत्ति को बेचकर वर पक्ष की मांग पूरी करते हैं। यद्यपि आजकल दहेज लेना और देना दोनों अपराध की श्रेणी में आता है किन्तु समाज में खुलेआम इसका व्यवहार हो रहा है। समाज में जो जितने ऊँचे पद पर है उसका मूल्य उतना अधिक है। यह एक बहुत बड़ी सामाजिक बुराई है। इसी प्रथा के कारण समाज में लिंग परीक्षण एवं भ्रूण हत्या जैसी गतिविधियां बढ़ रही हैं।

पुरुष और नारी के संयोग से सृष्टि चलती है। कोई एक सृष्टि को नहीं चला सकता। इसलिए पुरुष और नारी दोनों का सममूल्य है। नारी ही किसी की बेटी होती है किसी की बहू होती है किसी की दादी होती है। किन्तु आजकल समाज की विकृत मानसिकता के कारण भ्रूणहत्या का प्रचलन बढ़ गया है। स्त्री और पुरुष का अनुपात सृष्टि में पचास–पचास प्रतिशत का होना चाहिए। सृष्टि को संतुलित रखने और चलाने के लिए यह अनुपात बहुत आवश्यक है। किन्तु भ्रूणहत्या के कारण यह संतुलन बिगड़ता जा रहा है। भ्रूण परीक्षण के द्वारा जब यह पता चलता है कि वह लड़की है तो उसे गर्भ में ही मार दिया जाता है। जब बेटी ही नहीं रहेगी तो संसार कैसे चलेगा? बेटा और बेटी का समान दर्जा होना चाहिए। भारत में यह संतुलन धीरे–धीरे गड़बड़ाता चला जा रहा है। सबसे बड़ा कारण है दहेज प्रथा। दहेज का दानव समाज में बढ़ता जा रहा है। यह एक प्रकार का सामाजिक अभिशाप है। लड़की की शादी के समय लड़की के परिवार वालों के द्वारा लड़के या उसके परिवार वालों को नगद या किसी भी प्रकार की किमती वस्तु बिना मूल्य में देने को दहेज कहा जाता है। दहेज एक सामाजिक समस्या है। यह गैरकानूनी है, फिर भी समाज में खुलेआम चल रहा है। दहेज के कलंक और दहेजरूपी सामाजिक बुराई को केवल कानून के भरोसे नहीं रोका जा सकता, इसको रोकने के लिए समाज के हर वर्ग को मिलजुलकर प्रयास करना पड़ेगा। दहेज की बुराई प्रायः सभी जातियों में एकसमान है। भारत में जितने भी धर्म और सम्प्रदाय है उन सभी में यह बुराई समान रूप से व्याप्त है। दहेज का दानव धीरे–धीरे इतना भयंकर रूप धारण करते जा रहा है कि इसको अगर तत्काल समाप्त न किया गया तो भ्रूण हत्या कभी बन्द नहीं हो सकती।

लड़के और लड़कियां दोनों ही समाज के कर्णधार है। दोनों का बराबर अधिकार है। लेकिन समाज की गिरी हुई सोच के कारण यह माना जाता है कि बेटी पराया धन है और विवाह होने के बाद वह दूसरों के घर चली जायेगी। यह सोचकर कुछ लोग बेटी को अधिक पढ़ाते–लिखाते नहीं। किन्तु जो लोग इस सोच से परे हैं और लड़कियों को उच्च शिक्षा देकर उसका जीवन निर्माण करते हैं वे प्रगतिशील विचारों के होते है। नारी जाति को ईश्वर का यह वरदान है कि वह करूणा की मूर्ति है। हर समाज में अपने को संतुलित रखकर के आगे बढ़ सकती हैं। कुरीतियों को दूर करके ही समाज का विकास सम्भव है।